खिलती कलियाँ

हिन्दी विभाग

तीसवाँ संस्करण

2010-2011

स्टेल्ला मॉरिस [स्वायत्तशासी] कॉलेज, चेन्नै - 600 086

दो शब्द

स्वतंत्रता दिवस विशेषांक

"खिलती कलियाँ" पत्रिका की रचना, हर छात्र में लेखन-कला को जागृत करने के लिए की जाती है। जिस प्रकार कली के प्रस्फुटन पर फूल के मनमोहक रंगों का आभास होता है, उसी प्रकार आपकी रचनाओं से आपके शक्तिशाली व्यक्तित्व का आभास हो, आप कलियों की भाँति खिलती हुई जग के उपवन को अपनी उज्ज्वल कला से महकाएँ।

स्वायत्तशासी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत "खिलती कलियाँ" पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए विशेष हर्ष हो रहा है। गर्व है कि इसका प्रवर्त्तन एक से बढ़कर अनेकों के प्रयत्न से संपन्न हुआ। इसमें युवा मस्तिष्कों की उपज ही नहीं, उनकी अभिलाषाओं एवं विचारों का बेजोड़ संगम है। आशा है भविष्य में यह पत्रिका असंख्य सुन्दर कलियाँ विकसित कराएगी।

तीसवाँ संस्करण
2010-2011

अनुभूति संस्था के कार्यकारिणी सदस्य

कु. रुचिका जैन	–	*अध्यक्षा*
कु. वि. श्रुति	–	*उपाध्यक्षा*
कु. रिद्दी	–	*सचिव*
कु. साक्षी कपिल	–	*उप सचिव*
कु. श्रावणी राव	–	*कोषाध्यक्षा*
कु. माधुरी कृष्णा	–	*सह-कोषाध्यक्षा*

तीसवाँ संस्करण
2010-2011

आन बान

हर रोज देश प्रेम के भाव से जगती हूँ,
भ्रष्टाचार हिंसा और झूठ से भागती हूँ।
उडते झंडे के साथ गर्व से भरता है मेरा मन
हमारी संस्कृति ही है हमारा धन।
करने को तैयार है न्योच्छावर अपनी जान,
दिखा देंगे फिरंगों को अपनी आन बान और शान।

09/ZL/59
Ridhi

✤✤✤✤

हम और हमारा देश

इतिहास गा रहा है,
गुणगान ये हमारा,
दुनियावालों सुन लो,
यह देश है हमारा - 2

इस पर जन्म लिया है,
इसने पिलाया पानी,
माता है यह हमारी,
यही पिता, हमारा
देवता हिमालय, हमको पुकारता है,
गुनगुना रही है, निशदिन गंगा
की पुण्य धारा,
दुनियावालों सुन लो,
यह देश है हमारा -2

दी क्रांतिकारियों ने,
अंग्रेजों को चुनौती
पल-पल प्रकट हुआ था,
स्वातंत्र्य यह हमारा - 2

हम इनको भूल जाएँ
संभव नहीं कभी यह
इनके लिए जिये है,
यह धर्म है हमारा
यह कर्म है हमारा
दुनियावालो सुन लो
यह देश है हमारा -2

09/ZL/61
Priyanka Patil

✤✤✤✤

ऐ जवान बढ़ाओ देश की शान

ऐ देश के जवान -2
बन जा तू भारत माँ का गुलाम।
दे दे अपना बलिदान
बचाने के लिए देश की शान।

(भारत माँ का कर्ज चुकता होगा तुझे-2)
दे के अपनी जान।
छोड़ना होगा तुझे यह ऐशो आराम,
और लड़ना होगा तुझे कर के अपनी
आम-हराम।

(बन कर भगवान)-2
बचाले देश की शान।

तुम्हारे कारण बढ़ेगा देश का मान-सम्मान
सब याद करेंगे तुम्हारी कुर्बानी,-2
कह कह हम सबका भारत महान।

ऐ जवान बढाओ देश की शान
(बढ़ाओ देश की शान) -2
जय हिंद

10/ZL/262
V. Shivaranjani

✤✤✤✤

सोचो .....

अपनी हिममुकुट धारिणी
जीवन रस दायिनी,
अब देती है चेतावनी।

वस्त्रहरण हो रहा है इसकी वनस्पति का,
अश्रु उभरते है जब सोचती हूँ इस विनाश का।
फैलाता प्रदूषण वातावरण से दिलों तक,
लोभी मानव समझते हैं प्राण लेना अपना हक।

सीमाएँ बना दी देश-प्रदेशों के बीच,
लोग दिखाने लगे एक दूसरे को नीच।
धर्म और जाति को दीवार-सा खड़ा किया,
तुम्हारे अनुपम सौंदर्य को लूट लिया।

सोचो, क्या इसके लिए है विमोचन?
ज़रूर, जब हर एक को लगे अपनापन।
तो मिटाओ भेद-भाव, दिखाओ कृतज्ञता,
क्योंकि हल है सिर्फ अनेकता में एकता।

V. Sruthi
09/EL/25

आज का दिन

यों ही गुजर गया
आज का दिन
प्यार का गीत लिखा
न ही उदासी की
न ही डूबती सूरज की
फोटो खींची
न ही झुर्रियोंदार चेहरे की
तस्वीर बनाई
न ही हिना वाले
हाथों को हुआ
न ही चूडी वाली
कलाई को चूमा
जाने किस खाई में
उतर गया दिन
किरच किरच जैसे
बिखर गया दिन
यों ही गुजर गया
आज का दिन

Joanne Rosy
09/EC/69

✤✤✤✤

भारतवासी

हमारे देश है अहिंसावादी
लोग नहीं है, आतंकवादी
ओसामा या है बुष
हम लोग रहेंगे खुश।

लोग के पास है आत्मबल
है हमारे पास वीर सैनिक बल।

गर्मी है या जाड़ा
हम है भारतवासी।

लोग सुनेंगे कोई अच्छी सुन,
यही है हमारे देश की धडकन
हमेशा साथ रहेंगे
देश में हर तरफ़ शांति फैलाएँगे।

ऐसा गौरवशाली है देश हमारा
हम है भारतवासी।

S. Snehaa
09/ZL/24

✤✤✤✤

राष्ट्रीय चेतना

भारत माँ के आजादी के दिवाने
खून बहाया घायल हुए
त्याग दिए जीवन
आकर कर लिया उसे मुक्त
अंग्रेजों के जंजीरों से

लेकिन क्या कीमत है आजादी की
हमने कब यह जाना है
अधिकार की ही चिंता है
हमने आजादी का मतलब
भ्रष्टाचार निकाला है

आजादी में कश्मीर घायल
यहाँ हर नेता शाँती का कायर
गुलामी और दुखः ही बना अर्थ
आजादी का शायद।

समय हैं अंजानेपन के गहरे नींद से जागने का
राष्ट्रीय चेतना की जगाकर
समझो अपने कर्तव्य को
भारत है हमारी राष्ट्र भूमी
उसकी गरिमा का रखना है खयाल हमें
प्रसार करके शाँती और प्यार की भाषा

Anoushka Dalmeida
09/ZL/56

✤✤✤✤

शाँति

आजीवन भटक रहा इंसान।
शांति की खोज में।
पर ना पा सका उसे कभी,
सृष्टि की गोद में।
हर रास्ता उसने अपनाया,
अपनों को पराया बनाया।
पैसों का भी लोभ जताया,
फिर भी शांति को कभी न पाया।
हर विघ्न से वह जूझता रहा।
पूजा-पाठ, व्रत के नाम पर,
हर घड़ी, हर पल, नया ढोंग रचा।
फिर भी शांति उसने
खुद ही ठुकराई, थी,
अपनों से नजरें चुराई थी।
अपने कर्मों एवं धर्मों की नीलामी
उसने स्वयं ही करवाई थी,
तो फिर शांति भी तो
उससे पराई थी।

Shreya Sharli
09/EC/68

✤✤✤✤

नई सुबह हो नई डगर पर

सद्भाव जन जन रहे परस्पर,
देश रहे प्रगति के पथ पर,
आतंक का कोहराम हटाओ,
प्रेम हर हृदय में जगाओं।

नफरत की दीवार,
खडी न करो बीच में,
भाषा हो या धर्म किसी में,
सब अपने अपनापन लाओ
नही व्यर्थ में वैर बढाओ।

एक राष्ट्र के हम है वासी,
दुःख सुख में हम अविरल साथी,
अंधियारे को दूर भगाओ,
मन आंगन उजियारा जगाओ।

चलो आज स्वतंत्र पर्व पर,
नई सुबह हो नई डगर पर,
भटको को तुम राह सुझाओ,
आनेवाले कल दिखलाओ।

एक सूत्र में सब मिल बंधकर
भेद-भाव का नाम मिटाओ

राष्ट्र प्रेम के भाव जगाओ
गर्व से भारतीय कहलाओ।

Ruchika
09/FA/48

✤✤✤✤

मेरा हिन्दुस्तान

स्वर्ग से भी खूबसूरत
है हमारा हिन्दुस्तान
गाँधी नेहरू और भगत सिंह
है उसकी शान

भारत के इमारते संस्कृति और औरतों के वेश
ऐसी अनेक शानो-शौकत से भरा मेरा देश

मेहनत से काम करो
और बनो महान
अपने आप के लिए
कमाओ रोटी, कपडा और मकान

सही रास्ते पर चलो
सच्चाई को अपनालो
यही है भारत माता का संदेश

भिन्न लोग से भरा
है मेरा भारत प्यारा
तभी तो हर भारतवासी कहता है
"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा"

Anjali D'souza
09/FA/02

✤✤✤✤

बंद करदो

धरती माँ की है पुकार
ब्रह्माण्ड भी करता गुहार
मानव तुम रोक दो,
बंद करो ये संहार

तुमने जला डाला,
फूट की लगाई आग
देख कर नृशसता तुम्हारी
सृतिर भी गई हार

मानव तुम रोक दो
बंद करों ये सहार।

K. Jabeer Sulthana
09/BT/36

✤✤✤✤

मेरा भारत

हे मातृभूमि!
तेरे चरणों में सिर झुकाऊँ।
भक्ति भाव तेरे चरणों में लाऊँ
सेवा में भेद भाव भूल जाऊँ
तेरे ही काम आऊँ
तेरे ही गुण गाऊँ
यह तन और मन मेरे
तेरे तुझ पर अर्पित कर जाऊँ।

Shwetha
09/EC/26

✤✤✤✤

कविता

भारत हमारी जन्मभूमि
भारत हमारी कर्मभूमि।
भारत के सारे रंग नए
और यहाँ सब मिल कर रहे।।1।।

भारत जैसा कोई देश नहीं
और यही कहते है सभी।
यहाँ फूल खिलते हैं
यहाँ प्रेम मिलता है ।।2।।

देश वासी है भले
लोगों की मदद करते।
सब मिल-बाटकर रहते,
और यही सब कहते ।।3।।

सुख-दुख के साथी है सब
और प्रेम ही है सब के लब।
भारत हमारी जन्मभूमि
भारत हमारी कर्मभूमि।

Priyanka
09/SC/01

✤✤✤✤

मेरा भारत है महान

मेरा भारत है महान
जहाँ मिलता हरेक को समुचित सम्मान।
अनेक भाषाओं का संगम मन को रमता
रंग बिरंगे त्योहारों का हुल्लड़ मन को भाता।
कभी मनती होली कभी दिवाली यहाँ
कभी ईद की सिवाइयाँ दिलाती मीठेपन
का एहसास यहाँ
भारत से बस दूर करो गरीबी
फिर तो यहाँ रोज मनेगी रंगारंग होली।

L. Radharani
09/SC/41

✤✤✤✤

अंधे की लाठी

दूर दूर से आती उन तेज लहरों के बीच,
छुपि उनके अश्रुधारा को देखता है कौन?
शहरों के दहाड़ते इस शोर में,
इनकी कहानी को सुनता है कौन?
भेद भाव सब दूर कर,
इनको आज सहलाता है कौन?
खुद की खुशी से बढ़कर आज,
औरों की खुशी चाहता है कौन?
राम नाम तो लेना है आता,
पर राम का अस्तित्व जानता है कौन?
समाज सेवा की बात ये करे,
पर अंधे की लाठी बनता है कौन?
आँखों से अंधा कहते है उसे,
पर आप बताओ अँधकार में है कौन?

Anjali Balachandran
09/ZL/50

✤✤✤✤

कविता

ऊँचे ऊँचे पर्वत जिसके
बहती लहराती नदियाँ जिसकी
महकती सरसराती हवाएँ है जिसकी
वह भारत देश है मेरा।

यहाँ होता है खूब आन-पान और खान
सब लोगों का होता है यहाँ सम्मान
हर नागरिक ने बढ़ा दी इसकी शान
यह भारत देश है मेरा।

कहीं बच्चे खेलते गिल्ली डंडा
तो कहीं और लोग नाचते भांगड़ा
जहाँ देखो वहाँ है हरियाली
फूल तरह तरह के लाल और पीले।

हर एक को मिलता यहाँ सहारा
हर धर्म को एक दरिया
यह भारत देश है मेरा।

Madhuri
09/SC/19

✤✤✤✤

आज़ाद भारत

भाई के दुश्मन भाई न होते,
महल आशा के धराशाई ना होते,
काश यहाँ इंसान बनकर जीते सभी
तो हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई न होते
अंतर्मन से सोचे देश आजाद है।
आजाद नहीं, मानसिक रूप से आज भी हम
अंग्रेजों के गुलाम है और मुक्ति का प्रयास भी नहीं करते,
क्यों कि हमारी सोच में हम आज़ाद है।
मुझ जैसे तो लाखो है मुझसे कुछ नहीं, पर तुम
लाखों में एक हो
तुम जैसा कोई नहीं
भारत माता को शत शत नमन

Koyal Gupta
09/EC/58

✤✤✤✤

ध्वज प्रमाण

उच्च हिमालय, हिम शिखर,
केसरिया मेरा देश।
निर्मल शीतल गंगा बहती,
हरियाली मेरा देश।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण,
लोकतंत्र मेरा देश।
भारत माँ तुझ पर शीश नमन करते हम,
माँ! शीश नमन करते हम।
भारत हमारा देश, हम इसकी संतान
हे भारत माँ, इस पर मिटने का
दे दो हमें वरदान।
जय हिन्द। जय हिन्द। जय हिन्द।

Arpita Bhatnagar
09/EC/57

✤✤✤✤

देश हमारा

भारत देश हमारा है
सब देशों से न्यारा है।

उच्च हिमालय मस्तक इसका,
पग पर झलके सागर है,
नदियाँ भरी है। शीतल जल से,
झीले, झरने, गागर है

देश हमें प्राणों से प्यारा
इसको सदा सवाँरेगे
शांति, दया की राह अपनाकर
जग का आदर्श बनाएँगे।

भारत देश हमारा है।
सब देश से न्यारा है।

P. Nicky
09/SC/34

✤✤✤✤

भारत हमारी माँ

भारत में रहते हैं हम,
न भेद भाव और बिना कोई राग,
रहते हैं लोग छोटे-छोटे गाँव में,
पर करते हैं काम बड़े-बड़े देशों के दाम में,

मन में रखते हैं देश प्रेम,
इसके लिए प्राण भी त्याग देते हैं,
भारत तुम हमारी माँ हो,
हमेशा आपकी जय हो, जय हो।

S. Anjana Prasad
09/SC/30

प्यारा भारत

हमें मिला है भारत प्यारा
सभी देशों से है यह निराला
हमें गर्व सदा इस बात का
कि भारत प्रतीक मनुष्यता का

यहाँ के लोगों में बसी सादगी
प्राचीन होकर भी लाए ताज़गी
इस सभ्यता को बनाएँ रखने की
सीख हम सबको सीखनी।

Srinidhi
09/EC/27

✤✤✤✤

अपना सपना

जहाँ मन भय से मुक्त है,
जहाँ राह हमेशा शुद्ध है,
जहाँ कोई दीवार नहीं है,
जहाँ लक्ष्य आकाश पहुँचता है,
जहाँ मंदिर, मसज़िद और गिरजाघर हैं,
जहाँ हर क्षेत्र में हमने विजय प्राप्त की,
जहाँ सच्चाई एक धर्म है, जीवन का पथ है,
जहाँ संघर्षों में थी एकता,
जहाँ परम्परा विज्ञान से जुडी है,
यह देश है मेरा अपना।

V. Alagu
09/CH/32

✤✤✤✤

शहीदों की आवाज

सबसे पहले मेरा देश,
बाद में हैं मेरा अधिकार।

करूँ न्यौछावर इस धरती पर,
इस जीवन का सारा प्यार
जन्म लिया है जिस धरती पर,
उसका कर्ज चुकाएँगे।
करता-करता करे कुर्बान।
ऐसा समां बनाएँगे।

सबसे पहले मेरा देश,
बाद में है मेरा अधिकार।

शान है भारत इस दुनिया की,
मान रखेंगे हम इस भारत का,
देश की रक्षा में हमको,
जीना है, मर जाना है।

सबसे पहले मेरा देश,
बाद में है मेरा अधिकार।

श्रुति नाहर,
09/FA/24

मेरा भारत

देश जहाँ मैं पैदा हुई,
कहना है इसके बारे में बातें कई।
देश है लोकतंत्र,
हँसते हैं लोग स्वतंत्र।
संसार जाने इस देश को अपनी संस्कृति से,
जहाँ कभी नहीं पड़ती प्यार की।
वह देश है मेरा भारत।

रक्षा करती हिमालय उत्तर में,
दुलाती पैर हिन्द महासागर दक्षिण में।
जिसके चार कोने है अलग एक दूसरे से,
जहाँ मौसम बदलती है हर एक प्रदेश से।
वह देश है मेरा भारत।

भेद, भाव, जात, धर्म, संस्कृति, सभ्यता,
चेन्नै, मुंबई, दिल्ली, कोल्कत्ता,
सब है बिखरे रंगों की तरह,
आकर मिलते हैं एक रंगोली की तरह।
वह देश है मेरा भारत।

दीपिका एम. जॉन
09/EL/24

नया समाज बनाएँ

आओ, नया समाज बनाएँ,
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।
आओ, नया समाज बनाएँ।
जाति पाँति के बंधन तोड़े,
अपनेपन की कड़ियाँ जोड़ें,
इस धरती के हर मानव का
मानवता से नाता जोड़े।
एक दूसरे के सुख-दुख में
मिलकर बैठे हाथ बँटाएँ-
आओं नया समाज बनाएँ।

इस माटी का कण-कण चंदन,
इसे करें हम शत-शत बंधन,
नई रोशनी की किरणें बन
आज सजा दें हर घर आँगन
मिल-जुलकर आगे बढ़ने का
सबके मन में भाव जगाएँ
आओ, नया समाज बनाएँ
श्रम को जीवन मंत्र बनाएँ
ऊँच-नीच का भेद मिटाएँ
भारतमाता के सपूत बन
नवजीवन के अलख जगाएँ।
धरा सभी की, गगन सभी का
यही प्रेम-संदेश सुनाएँ
आओ, नया समाज बनाएँ

मेहर कुसुम
09/FA/35

सारा देश हमारा

जीना है तो मरना सीखो, गूँज उठे यह नारा,
केरल से कारगिल तक, सारा देश हमारा।
एक थे हम,
एक हैं,
और एक रहेंगे।
अटूट भारत है हमारा, गूँज उठे यह नारा,
केरल से कारगिल तक, सारा देश हमारा।
एक है अरमान
एक है सपना
और एक है अभिलाषा
जीना है तो मरना सीखो, गूँज उठे यह नारा,
केरल से कारगिल तक, सारा देश हमारा।

Swati Hiralal
09/BT/07

मेरी जन्म भूमि

मेरी जन्म भूमि है भारत
मेरी कर्म भूमि है भारत
ये वीरों को गौरवान्वित करता है भारत
बलिदान प्रदान भूमि हमारा भारत
ये गगन छूती श्रेणियाँ हैं
कहीं लम्बी पहाड़ियाँ
तो कहीं खाली पड़ा मरुस्थल
यहाँ मौजूद अनेको जंगल
कहीं पर मनभावुक सरोवर, तरुवर
और नदियाँ करती कलकल
अनेकता में एकता को लिए हुए चलता है भारत
कई भाषा जाती एवम् विभिन्न वेशभूषा।
कई उत्सव-त्योहार मिलकर मनाता है भारत
यह जन्मभूमि है लक्ष्मी, शिवाजी, प्रताप जैसे वीरों की
तो यहाँ जन्मे है बुद्ध, नानक और महावीर भी
यह जन्मदाता है गणितज्ञों का
और यहाँ जन्मा आयुर्वेद भी
उन्नति की ओर अभी भी अग्रसर है भारत
ऐसा महान है देश है मेरा भारत

09/SC/29

✤✤✤✤

हमारा देश

मैं अपने देश के लोगों के लिए स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करती हूँ,
मैं अपने लोगों के लिए ईमानदारी से जीने की प्रार्थना करती हूँ,
नफरत और हिंसा को छोडकर, प्यार से जीना सीखो,
अशांति और अराजकता के तूफान का धैर्य से सामना करना सीखो।
अपने देश के लोगों के लिए मुक्ति और समानता की प्रार्थना करती हूँ।
अपने देश के लोगों के लिए ईमानदारी से जीने की प्रार्थना करती हूँ।

Radhika
09/BT/47

✤✤✤✤

तूफान

मैं लाना चाहती हूँ
अपने देश के लिए तूफान से लड़ना चाहती हूँ।
मैं अपने देश के लिए मैं बवंडर लाना चाहती हूँ
मुझे विश्वास है अपने पर,
मैं अपने बलबूते पर नया हँगामा मचाना चाहती हूँ।
मैं जल बन प्रत्येक पुष्प को चूमना चाहती हूँ।
मैं भारत के कोने कोने में एक नया परिवर्तन लाना चाहती हूँ।
इस आजादी को सिर्फ गाकर, मत मनाओं भारतवालों - 2
इस आजादी से सबमें मानसिक आज़ादी जगाओं भारतवालों।
अपने देश के लिए मैं तूफान से लड़ना चाहती हूँ।
अपने देश के लिए मैं बवंडर लाना चाहती हूँ।

Saranya Babu
09/BT/52

✤✤✤✤

हमारा देश

हमारी देश के इतिहास में,
थे स्वतंत्रता सेनानी और देशप्रेमी हमारे पास
जिन्होंने अपने जिन्दगियाँ न्यौछावर की
उसके लिए लड़ते-लड़ते, जिस पर करते थे विश्वास
सुबह से शाम तक उनके शरीर मिट्टी में मिल जाने तक
दिखा दिया दूसरे देशों को कि हम एक साथ सशक्त है
एवं अन्याय के विरुद्ध एक जुट खड़े होने में सक्षम है।
मैंने भी लिया प्रण कि मैं करूँगी ऐसे काम
जिससे बने मेरा भारत 'महान'।

Tanitha
09/EC/36

✤✤✤✤

सारा हिन्दुस्तान हमारा

देख ज़रा अरमान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा।।

गो नहीं हम्में फौज़ी कुव्वत, फिर भी बहुत है दिल में हिम्मत
और हमारे साथ है कुदरत, अब कोई ताकत कोई हुकूमत।।

रोक तो दे तूफान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा।।

मंदिर, मसजिद और गिरजाघर, पर्वत, सागर और पैमाना।
जंगल, बस्ती और विराना, हर महफिल और हर कारखाना।

रोक तो दे तूफान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा।।
हर दर हर ऐलान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा।।

हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो।
सिर्फ यहाँ एक कौम बसी हो।।
देख ज़रा अरमान हमारा।
सारा हिन्दुस्तान हमारा।।

Susanna M.T.
09/EC/05

✤✤✤✤